चीनी के साथ कटोरी भी फ्री दीजिए

आज पड़ोसी ने दरवाजा खटखटाया। खटखटाकर पूछा कैसे हैं श्रीमान। हँसते हुए जब उन्होंने किया प्रणाम। तो बदले में मुझे भी करना पड़ा प्रणाम। जब दाँत फाड़कर उन्होंने दिखाया अपना जबड़ा । तो मुझे भी दिखाना पड़ा अपना थोबड़ा।फिर पूछा उन्होनें कि आपको तो साल भर हुआ सोसायटी में आए। आप तो इंद के चाँद हो गए हैं । क्या एकांत जीवी हैं आप। या ले लिया है सन्यास। क्या सोसायटी के किसी प्रोग्राम में नहीं है आपको दिलचस्पी। नहीं ऐसा तो नहीं है श्रीमान। ठीक है तब कभी आईए हमारे घर चाय पीने। कभी अपने घर भी बुलाईए। इसी बहाने मेलजोल बढ़ेगा। आदमी मेलजोल बढ़ाने से ही सामाजिक बनता है। बात को मैं टाल गया। इस तरह वो अगले दिन फिर आ धमके। आपको परेशानी तो होगी।

हो गई है रात। नहीं तो बाजार जाकर भी ला सकता था सामान। नहीं देता कोई आपको कष्ट। पड़ोसी हैं तो पड़ोसी होने के नाते काम आईए। हाँ भाई आप अपनी बात बताईए। क्या कोई जरूरी है काम। काम तो कोई खास नहीं था। बोले भाई मेरे यहाँ चीनी खत्म हो गई है। आज आप काम चलाईए। कल आपका काम मैं चलाऊँगा। बस इतनी सी है बात। लेकिन चीनी कैसे दूँ। आप तो खाली हाथ आए हैं। अरे श्रीमान ये इतनी बड़ी समस्या नहीं है। आसान है निदान। जब दुकानदार सामान देता है तो साथ में पन्नी भी फ्री दे देता है। उसी तरह आपको भी होना है मेहरबान। चीनी के साथ -साथ कटोरी भी देना है, श्रीमान् । कोई कटोरी या ग्लास निकालिए। और चीनी भरकर लाईए। इसमें कौन सी है बहुत बड़ी बात। फिर कटोरी ग्लास का आदान -प्रदान चलता रहेगा। इस तरह से एक कटोरा चीनी उनको निकालकर दे दिया। पड़ोसी लाल हँसते हुए चले गए । फिर इस तरह से वो रोज आने लगे। कभी चीनी लेने, कभी तेल लेने। कटोरी लौटाने के बहाने से आते। और मेरा आटा गीला कर जाते। इस तरह से मेरा राशन का बजट बिगड़ने लगा। सैलरी समय से पहले खत्म हो जाती थी। हर बार कटोरी लौटाने के बहाने आते। और आकर किचन में घुस जाते। लगता है आज कुछ स्पेशल बना रहा है। क्यों ना खाना आज आपके यहाँ खा लूँ। रोज वो आते और किसी ना किसी बहाने से कुछ ना कुछ खाते। या कटोरी में ले जाते। कभी कहते मेरी पत्नी को भिंड़ी मसाला बनाना ही नहीं आता है। आपके यहाँ की भिंड़ी मसाला क्या गजब का बनता है। आपके यहाँ की पालक पनीर के क्या कहने। वाह ! नाम लेते ही देखिए मुँह में पानी आ गया । मैं आशय समझ जाता और कटोरे में दाल और सब्जी भरकर ले आता । मटन, चिकन जिस दिन बनता। वो पूरे दिन घर में ही अड्डा मारे रहते। कहते भाई बहुत चिकन और मटन खाया हूँ । लेकिन भाभीजी के हाथों में तो जैसे जादू है। ऐसा खाना मैनें पूरी जिंदगी में कभी नहीं खाया है । कहते आपको खाली कटोरी नहीं लौटाना चाहिए। घर की हालत बिगड़ने लगती है।

महेश कुमार केशरी
बोकारो झारखंड

कहानी

ना छेड़ो गृहस्थी बेटी की

सुबह के दस बजे थे। घर का काम निपटाकर सरला जी ने रोज की तरह अपनी बेटी श्रुति को फोन लगाया। शादी को अभी छह महीने ही हुए थे। बेटी से बात करना और उसकी पारिवारिक बातो को जानना उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन चुका था। फोन उठाते ही श्रुति ने कहा, 'माँ, अभी थोड़ी व्यस्त हूँ। थोड़ी देर बाद बात करती हूँ।' सरला जी ने 'ठीक है' कहकर फोन रख दिया, लेकिन मन तो बेटी से बात करने को बेचैन था, घर के किसी काम में उनका मन ही नहीं लग रहा था बेटी के ससुराल में क्या चल रहा है, यह जानना उनके लिए बहुत जरूरी होता था। करीब दो घंटे बाद श्रुति का फोन आया। 'क्या कर रही थी बेटा?' माँ ने कुछ चिढ़ते हुए उस से पूछा। 'माँ, घर के काम में लगी थी। सुबह सबको ऑफिस जाना होता है, इसलिए काम जल्दी-जल्दी निपटाना होता हैं।' सरला जी से रहा नहीं गया। बोलीं, 'अरे, क्या सारा काम तुम ही करती हो? घर में और भी तो दो महिलाएँ हैं।' श्रुति मुस्कुराई और शांत स्वर में बोली, 'माँ, यहाँ सब मिलजुल कर काम करते हैं । हम सब मिलकर रहते हैं। आप मेरी चिंता मत किया कीजिए। मैं बहुत सुखी हूँ। बस, अगर हो सके तो बारह बजे के बाद फोन किया करिए। तब आराम से बात हो पाएगी।'

माँ फिर कुछ अनावश्यक सलाह देने लगीं, लेकिन इस बार श्रुति ने बड़े प्यार से कहा– 'माँ, मुझे अच्छा घर परिवार मिला हैं। सभी लोग सहयोगी हैं मैं उनके सहारे अपना घर अच्छे से संभाल रही हूँ। अब आप भी निश्चिंत रहिए। जब समय मिलेगा, मैं खुद आपको फोन कर लिया करूँगी। आप भी अपना ध्यान रखिए।' श्रुति की बातें सुनकर सरला जी कुछ पल के लिए मौन हो गईं। उन्हें महसूस हुआ कि इकलौती बेटी अब अपने नए घर परिवार में रच-बस चुकी है। उसे हर रोज अनावश्यक निर्देशों की नहीं, अपने नए माहौल में ढलने की ज़रूरत है, और मुझे भी अपना बचा समय कोई सामाजिक कार्य में बिताना चाहिए। और अपने घर परिवार पर ध्यान देना चाहिए । यह सोचकर भी वह डर गई कि ज्यादातर लड़कियों का परिवार तोड़ने में मां का हाथ होता है, अगर भगवान ना करे ऐसा कुछ उनकी बेटी के साथ हुआ तो वह क्या करेगी। उस दिन के बाद सरला जी ने बेटी को सलाह देना कम कर दिया, और भरोसा करना ज्यादा। बेटी की बातों ने उन्हें अनजाने ही यह सबक दे दिया, कि भले ही बेटी सही लेकिन अब वह किसी के घर की बहू है उसकी गृहस्थी में छेड़छाड़ नहीं करना चाहिए ,संदेह और लगातार निर्देश की जगह विश्वास करना जरूरी होता है, जो मायके और ससुराल दोनों को जीवन भर जोड़कर रखती है । उल्टे सीधे सुझाव,और गलत मार्गदर्शन बेटी के जीवन को दुखी कर सकते हैं । उसे अपनी समस्याओं को खुद ही सुलझाने दीजिए ।

वीना सक्सेना इंदौर,
9425089422

दरारपुर का महान सेतु

जब दरारपुर राज्य में महामहिम जोड़बंध सेतु बना था, तब उद्घाटन मंच पर घोषणा हुई थी- 'यह सेतु नहीं, इंजीनियरिंग का आठवाँ अजूबा है. यह तब तक अटल रहेगा, जब तक धरती गोल है. ' भीड़ ने तालियाँ बजाईं. नारियल फूटा. फीता कटा. भाषणों में पुल इतना मजबूत हो गया कि लोगों को लगा, अगर पृथ्वी टूट भी गई तो यह पुल दोनों हिस्सों को जोड़ देगा. समय बीता. एक सुबह लोगों ने देखा कि पुल की कमर पर एक लंबी-सी दरार मुस्कुरा रही है. लोग घबराए. अधिकारी दौड़े. मुख्य अभियंता ने दरार को बड़े प्यार से देखा और प्रेस से बोले, 'यह दरार नहीं है. पुल ने गर्मी के कारण अंगड़ाई ली है. बड़े-बड़े पुल ऐसा करते हैं. ' दूसरे अधिकारी बोले, 'जो लोग इसे दरार कह रहे हैं, वे विकास विरोधी हैं. ' तीसरे ने कहा, 'यह सोशल मीडिया की साजिश है. ' अगले दिन सरकारी विज्ञप्ति आई- 'पुल पूरी तरह सुरक्षित है. जनता अफवाहों पर ध्यान न दे. ' लोग घर लौट गए. कुछ महीने बाद पुल के एक विशाल पिलर के चारों ओर बना सुरक्षा घेरा अचानक नदी में समा गया. टीवी चैनलों पर बहस शुरू हुई. पत्रकारों ने पूछा, 'अब क्या कहेंगे? ' मुख्य अभियंता मुस्कुराए. 'गार्डवाल इसलिए गिरा क्योंकि वह अनावश्यक था. जैसे इंसान के शरीर में अपेंडिक्स होता है, वैसे ही पुल में गार्डवाल था. पुल अब पहले से हल्का महसूस कर रहा है. ' दूसरे अधिकारी ने जोड़ा- 'असल में नदी को खुलकर बहने की आज़ादी दी गई है. ' तीसरे ने कहा- 'गार्डवाल ने स्वयं त्यागपत्र दिया है. ' एक प्रवक्ता बोले- 'इसे गिरना नहीं, नियंत्रित विस्थापन कहा जाएगा. '

अखबारों में अगले दिन शीर्षक था-

'घबराने की जरूरत नहीं. पुल पहले की तरह मजबूत. ' लोग फिर शांत हो गए. लेकिन पुल शायद यह बयान नहीं पढ़ पाया. एक दोपहर अचानक उसका एक विशाल स्लैब धड़ाम से नीचे आ गिरा. आवाज़ इतनी तेज थी कि नदी के किनारे बैठे सारस भी उड़ गए. लोग चीख पड़े. वाहन रुक गए. धूल का बादल छा गया.इस बार पत्रकार सीधे सचिवालय पहुँचे. सभी कैमरे ऑन थे. मुख्य सचिव ने माइक संभाला. उन्होंने बड़ी गंभीरता से कहा– 'देखिए... सबसे पहले यह स्पष्ट कर दूँ कि पुल नहीं गिरा है. केवल उसका एक छोटा-सा हिस्सा नीचे आया है. ' पत्रकार ने पूछा- 'लेकिन स्लैब तो टूट गया. ' उन्होंने कहा- 'टूटा नहीं. नीचे उतरा है. ' 'नीचे क्यों उतरा? ' 'जांच के लिए. ' पूरा हाल शांत हो गया. पत्रकार चौंका. 'मतलब? ' अधिकारी ने फाइल पलटते हुए कहा- 'हम पुल की मजबूती की जांच करना चाहते थे. इसलिए स्लैब को नीचे भेजा गया है. उसके नमूने प्रयोगशाला जाएंगे. रिपोर्ट आने के बाद पता चलेगा कि वह क्यों टूटा. ' एक पत्रकार हँस पड़ा- 'साहब, जांच तो ऊपर रहते भी हो सकती थी. '

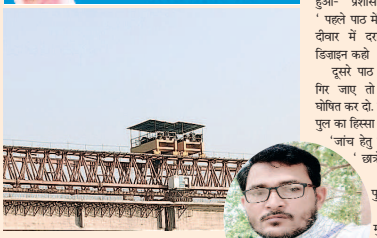

अधिकारी बोले-

'ऊपर रहने पर वैज्ञानिक परीक्षण संभव नहीं था. ' दूसरे अधिकारी ने बात आगे बढ़ाई- 'असल में यह आधुनिक तकनीक है. पहले गिराओ, फिर जांच करो. ' तीसरे ने कहा- 'विदेशों में भी ऐसा होता होगा. ' चौथे ने कहा-

'जो वीडियो वायरल हो रहा है, उसमें स्लैब गिरता हुआ दिख रहा है. लेकिन वीडियो का एंगल गलत है. उधर दरारपुर विश्वविद्यालय ने इस पर शोध शुरू कर दिया. नया विषय शुरू हुआ- 'प्रशासनिक कल्पनाशास्त्र. ' पहले पाठ में पढ़ाया गया- यदि दीवार में दरार दिखे तो उसे डिज़ाइन कहो

दूसरे पाठ में- यदि गार्डवाल गिर जाए तो उसे अनावश्यक घोषित कर दो. तीसरे पाठ में- यदि पुल का हिस्सा टूट जाए तो कहो–

'जांच हेतु नियंत्रित अवतरण. ' छात्रों ने पूछा-

'सर, अगर पूरा पुल ही गिर जाए? प्रोफेसर मुस्कुराए-

'तब प्रेस विज्ञप्ति आएगी-'पुल को आधुनिक तकनीक से चरणबद्ध तरीके से धरातल पर लाया गया है. इससे भविष्य में नए पुल के निर्माण में सुविधा होगी.' '

पूरा क्लास हँस पड़ा. कुछ दिन बाद सरकार ने एक उच्चस्तरीय समिति बनाई.= समिति ने छह महीने बाद रिपोर्ट दी. रिपोर्ट में लिखा था- 'स्लैब गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में नीचे गया. गुरुत्वाकर्षण की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता. ' दूसरी समिति बनी. उसने कहा- 'नदी नीचे थी, इसलिए स्लैब नीचे गया. ' तीसरी समिति ने कहा- 'यदि नीचे नदी न होती तो स्लैब नीचे नहीं जाता. ' सरकार ने तीनों रिपोर्ट स्वीकार कर लीं. दरारपुर के लोग अब समझदार हो चुके थे. अब वे किसी सरकारी स्पष्टीकरण पर चौंकते नहीं थे. एक दिन किसी ने मजाक में कहा- 'सुना है, कल सूरज पश्चिम से निकलेगा. ' दूसरा बोला- 'कोई बात नहीं. शाम तक प्रेस विज्ञप्ति आ जाएगी कि सूरज दिशा परीक्षण के लिए अस्थायी रूप से पश्चिम भेजा गया था. ' तीसरा बोला- 'और विशेषज्ञ बताएँगे कि पूर्व दिशा पर अनावश्यक दबाव कम करने के लिए ऐसा किया गया. ' सब हँस पड़े. लेकिन उस हँसी में व्यंग्य कम, बेबसी अधिक थी. क्योंकि दरारपुर में अब पुलों से ज्यादा मजबूत केवल एक चीज बची थी-बयानों की सीमेंट. उसमें न कभी दरार पड़ती थी, न गार्डवाल गिरता था, न स्लैब टूटता था. चाहे वास्तविकता कितनी भी ढह जाए, शब्दों का पुल हर बार नया खड़ा कर दिया जाता था.

कुमार धनंजय सुमन
सोनवर्षा,थाना-
बिहपुर,भागलपुर,बिहार
853201

मोहल्ले के चिपकूमल जी

हर शहर की कुछ खासियत होती है। लेकिन एक ही तरह के लोग हर शहर में पाए जाते हैं। हमारे मोहल्ले में भी एक शख्सियत हैं चिपकू मल जी। उम्र पूछो तो कहेंगे 'उम्र तो बस एक नंबर है ', और आधार कार्ड मांगो तो कहेंगे 'वो घर पर रखा है, अलमारी की चाबी कहीं खो गई है '। चिपकू मल जी का असली काम क्या है ये आज तक कोई नहीं जान पाया। दुकान है नहीं, नौकरी है नहीं, खेत है नहीं। फिर भी सुबह 7 बजे से रात 10 बजे तक फुल टाइम प्रो रहते हैं। उनका ऑफिस है चौराहे वाली चाय की दुकान। वहां सुबह से शाम तक एक ही कुर्सी पर ऐसे चिपके रहते हैं जैसे वो कुर्सी उनके नाम रजिस्टर हो। चाय वाले भैया भी अब चाय के साथ उधारी का हिसाब भी साथ में दे देते हैं। चिपकू मल जी हर मामले में एक्सपर्ट हैं। क्रिकेट का मैच हो तो कमेंट्री ये करेंगे। राजनीति की बात हो तो विश्लेषण ये करेंगे। पड़ोस में किसी की शादी हो तो पंडित जी से पहले ये मुहूर्त बता देंगे। डॉक्टर ने कोई दवाई लिखी हो तो उससे पहले ये बता देंगे कि 'अरे ये दवाई मत लेना, मेरे मामा के ससुर ने ली थी, उनको एलर्जी हो गई थी '। एक बार म्युनिसिपालिटी वाले नाली साफ करने आए तो चिपकू मल जी 2 घंटे तक उनको इंजीनियरिंग समझाते रहे। अंत में नाली तो साफ हुई नहीं, पर म्युनिसिपालिटी वालों का आधा दिन जरूर खराब हो गया। इनकी सबसे बड़ी कला है 'चिपकना '। किसी की गाड़ी में जगह खाली दिखी नहीं कि तुरंत पूछेंगे 'कहां जा रहे हो? मैं भी वहीं तक चलूंगा।' किसी के घर पार्टी हो, कार्ड आया हो या ना आया हो, ये पहुंच जाएंगे। और पहुंच कर ऐसे मिलेंगे जैसे बरसों से इनवाइट का इंतजार कर रहे थे। खाना भी दो बार लेंगे, और जाते समय पैकेट में मिठाई भी 'बच्चों के लिए' रखवा लेंगे। सोशल मीडिया पर चिपकू मल जी और भी खतरनाक हैं। सुबह सबसे पहला गुड मॉर्निंग मैसेज ये भेजेंगे। उसमें 10 फूल, 2 सूरज और एक भगवान की फोटो होगी। दिन में 4 बार फॉरवर्ड मैसेज आएगा 'इसे 10 लोगों को भेजो वरना... '। रात को 11 बजे स्टेटस लगाएंगे 'नींद नहीं आ रही, कौन कौन जाग रहा है '। और हर पोस्ट के नीचे कमेंट जरूर करेंगे 'वाह क्या बात है, बहुत खूब' चाहे पोस्ट में लिखा हो 'मेरी बिल्ली मर गई '। सरकारी योजना की बात हो तो चिपकू मल जी सबसे आगे। पेंशन का फॉर्म, आवास का फॉर्म, सोलर पैनल का फॉर्म, सब भर रखा है। बाबू जी से इतनी दोस्ती है कि बाबू जी भी कहते हैं 'अरे चिपकू जी आप फिर आ गए?' जवाब में चिपकू मल जी मुस्कुराकर कहते हैं 'क्या करें साहब, देश सेवा करनी पड़ती है '। लोग इनसे परेशान भी होते हैं और इनके बिना बोर भी होते हैं। क्योंकि जहां चिपकू मल जी नहीं होंगे वहां पंचायत में स्वाद नहीं आएगा। कोई नई अफवाह नहीं होगी, कोई फ्री का ज्ञान नहीं मिलेगा, और किसी की शादी में एक्स्ट्रा मेहमान भी नहीं आएगा। कुल मिलाकर चिपकू मल जी उस रिमोट की तरह हैं जिसकी बैटरी खत्म नहीं होती। कभी चैनल बदल देंगे, कभी आवाज तेज कर देंगे, कभी खुद ही बंद हो जाएंगे। पर टीवी चलता रहेगा। बस फर्क इतना है कि रिमोट को आप सोफे के नीचे रख सकते हो। चिपकू मल जी को नहीं।

-विकास कुमार शर्मा
शिवपुरी - बी, गंगापुर सिटी
(राजस्थान)

कहानी

नाक

मायके जाने पर पत्नी अड़ी थी। दूल्हे ने लाख मनाया, पर न मानी। नौबत रे तू की आ गयी। गुस्से से दूल्हे ने, पत्नी की पिटाई करते हुए उसकी नाक काट ली।

घटना की जानकारी होने पर मायके पक्ष के लोग, वहां आ गये, कोहराम शुरू हुआ,फिर क्रोधावेश में दूल्हे की सास ने, दूल्हे की कुंवारी बहन की नाक

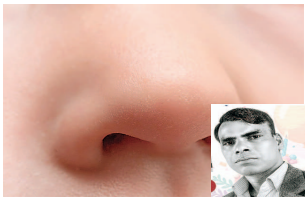

अपने दांतों से काट ली। हलचल मच गयी।

अब दो नाक कटी महिलाओं का इलाज अस्पताल में चल रहा था और थाने में क्रास केस की तैयारी। शहर में हर शख्स यही कर रहा था कि आखिर किस 'नाक' के बदले नाक काटी गयी। आखिर दो 'नाक' कटने के बाद किसकी-किसकी नाकें बची। यह बड़े 'नाक' वाले किस लोक के लोग हैं भाई।

-सुरेश सौरभ
पता- निर्मल नगर लखीमपुर खीरी-262701
मो-7860600355

एक पौधा माँ के नाम... और दूसरा कैमरे के नाम

बरसात आते ही देश में एक अद्भुत ऋतु का आगमन होता है। मौसम विज्ञान वाले इसे वर्षा ऋतु कहते हैं, किसान इसे उम्मीद का मौसम कहते हैं, बच्चे इसे कागज़ की नावों का मौसम कहते हैं, लेकिन सरकारी तंत्र इसे 'पौधारोपण उत्सव' के नाम से जानता है। जैसे ही पहली फुहार पड़ती है, हर विभाग के गोदाम से फावड़े बाहर निकल आते हैं और कैमरे अपने-अपने कवर छोड़कर हरियाली की खोज में निकल पड़ते हैं। इन दिनों एक नया अभियान खूब चर्चा में है– 'एक पौधा माँ के नाम '। सुनने में इतना भावपूर्ण कि पत्थर भी पिघल जाए। माँ के प्रति सम्मान व्यक्त करने का इससे सुंदर विचार क्या हो सकता है? किंतु व्यंग्य की दुनिया में प्रश्न पूछना भी धर्म है। इसलिए मन पूछ बैठता है–क्या यह पौधा सचमुच माँ के नाम लगाया जा रहा है, या केवल कैमरे के नाम? दृश्य लगभग हर जगह एक जैसा होता है। मंच सजता है, कुर्सियाँ लगती हैं, बैनर टँगते हैं, अतिथि आते हैं, पौधे कतार में रखे जाते हैं। कोई फावड़ा पकड़ता है, कोई गमला संभालता है, कोई पौधे को सीधा करता है और सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कैमरे के सामने मुस्कुराता है। जैसे ही छायाकार कहता है– 'बस, हो गया '–धरती भी समझ जाती है कि अब उसका भाग्य उसके भरोसे है। सेंटी गुरु कहते हैं कि हमारे यहाँ पौधे कम और पौधारोपण अधिक होते हैं। पौधा लगाना कठिन नहीं है, कठिन है उसे पाँच वर्ष तक जीवित रखना। लेकिन पाँच वर्ष बाद कौन पूछेगा? अगले वर्ष फिर बरसात आएगी, फिर नया गड्ढा खोदा जाएगा, फिर नया पौधा लगेगा और फिर वही पुरानी तस्वीर नई उपलब्धि बन जाएगी। अब तो विभागों में भी हरियाली का हिसाब है। मंच सजता है, कुर्सियाँ लगती हैं, बैनर टँगते हैं, अतिथि आते हैं, पौधे कतार में रखे जाते हैं। कोई फावड़ा पकड़ता है, कोई गमला संभालता है, कोई पौधे को सीधा करता है और सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कैमरे के सामने मुस्कुराता है। जैसे ही छायाकार कहता है– 'बस, हो गया '–धरती भी समझ जाती है कि अब उसका भाग्य अधिक आँकड़े उग रहे हैं। हर कार्यालय के पास अपनी संख्या है, हर संस्था के पास अपना रिकॉर्ड है और हर प्रेस विज्ञप्ति में हरियाली लहलहा रही होती है। बस दुर्भाग्य यह है कि जंगलों में वह हरियाली दिखाई नहीं देती। आजकल पौधे भी बड़े समझदार हो गए होंगे। जैसे ही कोई अधिकारी, नेता या संस्था का प्रतिनिधि आता होगा, वे सोचते होंगे– 'लो, आज फिर हमारा छायाचित्र बनेगा।' उन्हें शायद यह भी मालूम होगा कि पानी मिलने की संभावना छायाचित्र छपने के अनुपात में घटती जाती है।

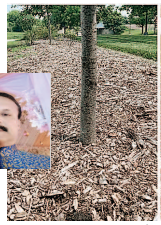

सबसे रोचक दृश्य तब होता है जब पौधे के चारों ओर पाँच लोग खड़े होकर एक साथ मिट्टी डालते हैं। बेचारा पौधा समझ ही नहीं पाता कि उसे लगाया जा रहा है या सम्मानित किया जा रहा है। फिर तालियाँ बजती हैं, धन्यवाद ज्ञापन होता है और सभी अगले कार्यक्रम के लिए प्रस्थान कर जाते हैं। पौधा वहीं खड़ा रह जाता है–नल की ओर आशा भरी निगाहों से देखते हुए। यदि सचमुच यह अभियान माँ के सम्मान के लिए है, तो माँ की तरह उसकी देखभाल भी करनी होगी। माँ केवल जन्म नहीं देती, पालन भी करती है। वह रोज़ पानी देती है, धूप से बचाती है, बीमारी में सेवा करती है और बड़े होने तक साथ निभाती है। यदि पौधे को भी माँ के नाम लगाया है, तो उसे माँ की तरह पालना भी होगा। पेड़ों की दुनिया में कोई प्रेस वार्ता नहीं होती। उन्हें विज्ञापन नहीं चाहिए, केवल पानी चाहिए। उन्हें भाषण नहीं चाहिए, केवल मिट्टी चाहिए। उन्हें तालियाँ नहीं चाहिए, केवल सुरक्षा चाहिए। यदि गाय चर गई, यदि बकरी कुतर गई, यदि किसी ने उखाड़ दिया, तो पौधे को यह संतोष नहीं होता कि उसका छायाचित्र अखबार में छपा था। हमारे यहाँ कभी-कभी पौधे लगाने का उत्साह इतना अधिक होता है कि लगता है धरती से अधिक गड्ढों की चिंता की जा रही है। लेकिन हर गड्ढा पेड़ नहीं बनता और हर पौधारोपण जंगल नहीं बनाता। जंगल तब बनता है जब वर्षों तक धैर्य, संरक्षण और जिम्मेदारी साथ निभाते हैं। कल्पना कीजिए, यदि हर परिवार सचमुच एक पौधे को अपने परिवार के सदस्य की तरह पाल ले, तो पाँच वर्ष बाद शहर का चेहरा बदल सकता है। न कोई विशेष अभियान चाहिए, न बड़े-बड़े मंच, न भारी घोषणाएँ। केवल एक संकल्प– 'जब तक यह पौधा पेड़ नहीं बनेगा, तब तक इसकी जिम्मेदारी मेरी होगी। ' सेंटी गुरु कहते हैं कि धरती को भाषणों से नहीं, छाया से राहत मिलती है। आँकड़ों से नहीं, ऑक्सीजन से जीवन मिलता है। पौधा लगाना पुण्य है, लेकिन पौधे को बचाना उससे भी बड़ा धर्म है। इस बरसात यदि सचमुच माँ के नाम पौधा लगाइए, तो उसके साथ एक और संकल्प भी लगाइए–जब तक वह वृक्ष न बन जाए, उसे अनाथ नहीं छोड़ेंगे। क्योंकि इतिहास पौधे लगाने वालों को नहीं, पेड़ बचाने वालों को याद रखता है। वरना अगले वर्ष फिर वही बरसात होगी, वही गड्ढा होगा, वही फावड़ा होगा, वही मुस्कान होगी, वही तस्वीर होगी... और धरती फिर चुपचाप पूछेगी– 'बेटा, इस बार पौधा मेरे नाम लगाया है... या फिर केवल कैमरे के नाम? '

अजय कुमार बियानी
अभियंता, स्वतंत्र लेखक
एवं तकनीकी विश्लेषक